दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ratan Deep Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 109 टिप्पणी (Remarks): उत्तर अच्छे हैं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) यहु तन जालौं मसि करुं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पद्यांश कबीरदास जी द्वारा लिखित एवं श्याम सुंदर दास द्वारा संकलित है।

इन पंक्तियों में कबीर ~~द्वारा~~ ईश्वर की प्रेमप्राप्ति के लिए स्वयं को बलिदान करने का संकल्प व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या :-

कबीरदास जी कहते हैं कि वह ईश्वर के प्रेम को प्राप्त करने के लिए विह्वल हैं। वे अब अपना तन जलाकर कोयला कर देना चाहते हैं। जब इस कोयले का धुआँ स्वर्ग पहुँचेगा, तभी प्रभु को उनका स्वप्न आयेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभु का ध्यान धैर्य पर ही प्रेमरूपी वर्षा से ईश्वर की प्रेमाग्नि शांत होगी।

काव्यगत सौन्दर्य :-

(1) कबीरदास के भावनात्मक रहस्यवाद की विचारधारा व्यक्त हुई है।

(2) ईश्वरप्रेम की विरहता का अनुपम वर्णन किया गया है।

(3) भाषा सधुक्कड़ी है।

(4) उपमा एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग दृष्टव्य है।

(5) कबीरदास जी ने ईश्वर विरह को "तलफै बिनु बालम मोर जिया" के माध्यम से भी व्यक्त किया है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यावतरण सूफी काव्यधारा के सशक्त हस्ताक्षर मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के नागमती के वियोग वर्णन से लिया गया है।

रत्नसेन, पद्मावती की खोज में सिंहल द्वीप की ओर चला गया है। नागमती अपने पति के वियोग में दुःखी है। यहाँ इसी स्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :-

नागमती अपने विरह से दग्ध है। वह कहती है कि मेंढक, मोर, कोयल, पपीहा सब अपनी ध्वनियों एवं कोलाहल से उसके विरह को बढ़ा रहे हैं।

वह आगे कहती है कि पुष्य नक्षत्र आ चुका है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु उसके पति घर में नहीं है, ऐसे मैं उसका छप्पर कौन ठीक करेगा। जिन स्त्रियों के पति ऐसे मौसम में उनके पास हैं, वे तो फूली नहीं समा रही हैं, किन्तु मेरा पति तो मेरे साथ नहीं है, ऐसे में मैं सर्वस्व सुखों को भूल चुकी हो।

काव्यगत सौन्दर्य :-

① नागमती के विरह वर्णन का मार्मिक चित्रण है, इसे आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु कहा है।

② प्रकृति का उद्दीपन रूप में सुंदर वर्णन है।

③ नागमती के रानीपन नहीं बल्कि नारीपन का अनुपम वर्णन हुआ है।

④ अवधी का माधुर्य सर्वत्र विद्यमान है।

⑤ अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे ह्वै जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यावतरण भक्तिकालीन कृष्णकाव्य धारा के कवि सूरदास द्वारा रचित एवं आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित भ्रमरगीतसार से लिया गया है।

श्रीकृष्ण द्वारा भेजे गये उद्धव जब गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की शिक्षा देने का प्रयास करते हैं तब गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में बँध जाने की मजबूरी व्यक्त कर रही हैं।

व्याख्या :-

गोपियाँ उद्धव के तर्कों का जवाब देते हुए कहती हैं कि उनके हृदय में श्रीकृष्ण ऐसे समा गये हैं कि अब वे किसी भी प्रकार निकल नहीं सकते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हमारे लिए तो आज भी वे यशोदा के ग्वाल बाल ही हैं। हमसे कुल, गोत का अन्तर समझा नहीं जाता है।
वे आगे कहती हैं कि हम नहीं जानती हैं कि वसुदेव और देवकी कौन है? हमें तो बस यह पता है कि बिना श्याम सुन्दर को देखे, हमें कुछ और सूझता ही नहीं है।

काव्यगत सौन्दर्य :-

(1) सूरदास ने गोपियों के माध्यम से सगुण धारा को प्रवाहित किया है।

(2) गोपियों एवं श्री कृष्ण के प्रेम के सात्विक रूप का वर्णन हुआ है।

(3) ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(4) अनुप्रास एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग दृष्टव्य है।

(5) प्रासंगिकता - अमीर खुसरो ने भी लिखा है -
"खुसरो दरिया प्रेम का उल्टी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया जो डूबा सो पार।"

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौं मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध में परति चौंधि सी डीठि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :

प्रस्तुत काव्यावतरण रीतिकाल की श्रृंगार रस के सिरमौर कवि बिहारी द्वारा रचित बिहारी सतसई से उद्धृत है।

प्रस्तुत पंक्ति में बिहारी द्वारा नायिका के अंगों का शोभापूर्ण वर्णन किया गया है।

व्याख्या :-

नायिका के अंगों की शोभापूर्ण वर्णन करते हुए बिहारी कहते हैं कि नायिका के हँसने से उसके दाँत अत्यन्त चमक रहे हैं। इससे सर्वत्र उजाला फैल गया है।

इस चमक से वस्तुतः पूर्णिमा होने का भ्रम हो रहा है अर्थात नायिका के इस अद्भुत चमक से लोगों को भ्रम हो गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य :-

(1) बिहारी, नायिका के नख-शिख वर्णन के प्रभावी कवि है। यहाँ भी यह प्रभाव दृष्टव्य है।

(2) माधुर्यपूर्ण ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(3) उपमा एवं रूपक अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(4) भाषा की समाहार शक्ति एवं बिम्ब निर्माण की अद्भुत छटा बिखरी हुई है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

संदर्भ एवं प्रसंग:

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल के सशक्त प्रगतिशील कवि नागार्जुन द्वारा रचित 'हरिजन गाथा' के द्वितीय खण्ड से उद्धृत हैं।

इन पंक्तियों में कवि द्वारा दलितों पर किये जा रहे अत्याचारों के प्रत्युत्तर में श्री कृष्णावतार के मिथक द्वारा क्रांति-चेतना का स्वर मुखरित किया गया है।

व्याख्या:-

लेखक एक बालक के जन्म द्वारा दलितों के क्रांति स्वर को मुखरित करते हुए कहते हैं कि यह बालक एवं इसके मित्र सदियों से पददलितों पर हो रहे अत्याचारों का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतिकार करेंगे।

यह बालक एक क्रांति नेता की भांति उदित होगा, इसका बहुत नाम होगा एवं बड़े-बड़े व्यक्ति इससे स्वयं मिलने आयेंगे।

काव्यगत सौन्दर्य :

(1) बिहार के बेलछी काण्ड पर आधारित इस कविता में कवि ने दलितों पर हो रहे अमानुषिक अत्याचार का वर्णन किया है एवं क्रांति इसका हल बताया है।

(2) भाषा तद्भव पूर्ण किन्तु प्रवाहयुक्त है, लीडर जैसे अंग्रेजी शब्द भी विद्यमान है।

(3) आंतरिक लय एवं प्रवाह विद्यमान है।

(4) आधुनिक काल की कविताओं में बाह्य विधान में छन्द तो नहीं होता है, किन्तु 'मैं', 'से' से तुकबन्दी प्रदर्शित है।

(5) इसी क्रांति की अवधारणा को दिनकर ने "हटो व्योम के मेघ स्वर्ग लूटने हम आते हैं दूध दूध ओ वत्स तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं" से व्यक्त किया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित मनोवैज्ञानिक उपन्यास गोदान से लिया गया है।

यह अंश मि. मेहता एवं मिस. मालती के वार्तालाप से लिया गया है। इसमें मालती द्वारा प्रेम के स्वरूप पर उसके विचारों को व्यक्त किया जा रहा है।

व्याख्या :- मालती प्रेम को विश्वास के रूप में देखती है। वह मानती है कि प्रेम दैहिक आवश्यकता से ऊपर आत्मिक रूप से स्पष्टतः व्यक्त होता है।

प्रेम में हिंसा एवं अविश्वास नहीं बल्कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समर्पण और श्रद्धा की आवश्यकता होती है। प्रेम का मंदिर उसकी परीक्षा लेने वालों के लिए नहीं बल्कि उसके उपासकों के लिए है।

विशेषताएं :-

(1) प्रेम के छायावादी स्वरूप का वर्णन हुआ है।

(2) प्रेमचन्द द्वारा सूक्तिवाक्यों यथा "प्रेम को देह की नहीं आत्मा की वस्तु बताया गया है"।

(3) संवाद शैली एवं हिन्दुस्तानी प्रकृति की भाषा का सफल प्रयोग हुआ है।

(4) प्रासंगिकता :-
आज के भौतिकतावादी युग में जहां प्रेम एवं वासना एक दूसरे के पर्यायवाची बन गये हैं, प्रेमचन्द के ये विचार प्रकाशपुंज का कार्य करते हैं।

Good

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश नवलेखन दौर के प्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश द्वारा लिखित चर्चित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के तृतीय अंक से लिया गया है।

कालिदास अपना राज-पाट छोड़कर मल्लिका के पास वापस आया है। वह मल्लिका से संवाद के क्रम में उपरोक्त कथन कह रहा है।

व्याख्या :-

कालिदास मल्लिका से कहता है कि यह संभव है कि मल्लिका उसे पहचान न पाये। कालिदास जानता है कि वह बदल गया है।

वह आगे कहता है कि वह स्वयं को भी नहीं पहचान पा रहा है क्योंकि उसका व्यक्तित्व विखण्डित हो गया है। वह एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अजनबीपन के दौर से गुजर रहा है।

विशेषताएँ :-

(1) नाटक में अस्तित्ववाद की धारा का प्रभाव दिखाई देता है।

(2) व्यक्तित्व के विखण्डन, अजनबीपन, व्यक्ति को जो होना चाहिए और जो वो है, का अन्तर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है।

(3) भाषा सरस एवं तद्भव तथा तत्सम का मिश्रण है।

(4) एकालाप कुछ लम्बा, परन्तु विराम चिह्नों के कुशल प्रयोग से प्रवाहपूर्ण बना हुआ है।

(5) प्रासंगिकता :-

व्यक्ति विखण्डन की यह समस्या वर्तमान में भी गाँवों से शहरों में प्रवासित हो रहे व्यक्तियों में देखी जाती है। अतः इस सम्बन्ध में ये पंक्तियाँ प्रकाश डालकर समस्या को उजागर करती है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित कहानी "यही सच है" से उद्धृत है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कहानी की नायिका दीपा एवं उसके प्रेमी संजय के प्रणय एवं दीपा की प्रेम की स्वीकरोक्ति तथा अनुभव को दर्शाया गया है।

व्याख्या :-

दीपा अपने पूर्व प्रेमी निशीद को भुलाने का प्रयत्न करती है। संजय के साथ गुजारे पलों को वह व्यक्त कर रही है। संजय के साथ आलिंगबद्ध होकर बेसुध होती जा रही है

फूलों की महक और संजय प्रेम प्रणय को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को अपना यथार्थ मानते हुए स्वीकार करती है कि यह क्षण, यह सुखद अनुभव ही सत्य है, उसका पूर्व प्रेम सत्य नहीं था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विश्लेषताएँ :-

(1) मन्नू भण्डारी प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका रही हैं। नारीचेतना एवं यौन प्रसंगों की बेबाक प्रस्तुति इन पंक्तियों में भी दिखाई देती है।

(2) नारी की सती-सावित्री की तस्वीर को वास्तविक एवं प्रायोगिक जीवन पर उतारने की यह कवायद हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

(3) भाषा सहज एवं प्रभावपूर्ण है।

(4) विराम चिन्हों का कुशल उपयोग किया गया है।

(5) प्रासंगिकता :- मोहन राकेश ने भी "एक और ज़िंदगी" में यह प्रश्न उठाया है कि व्यक्ति को जीवन में अपनी गलतियों को सुधारने या पूर्व परिस्थितियों से बाहर निकलने का मौका मिलना चाहिए।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :-

प्रस्तुत अवतरण प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक डा. रामविलास शर्मा द्वारा लिखित निबन्ध "तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य" से लिया गया है।

इन पंक्तियों में लेखक द्वारा तुलसी साहित्य के प्रगतिशील मूल्यों की व्याख्या के क्रम में विभिन्न जातियों, कोल किरातों की मध्यकालीन दशा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :-

लेखक कहता है कि कोल-किरातों की दयनीय स्थिति मुगलकाल एवं ब्रिटिश शासन के दौरान बनी रही है।

मुगलकाल में इनको पकड़कर काबुल में बेच दिया जाता था और ब्रिटिश शासन काल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में भी अनेक मानवीय अधिकारों का खुला उल्लंघन होता है। ऐसे में तुलसीदास के माध्यम से इन निम्न जातियों के सम्मान को दिखाना उनकी प्रगतिशीलता का परिचायक है।

विशेषताएँ :-

(1) डा. शर्मा एक मार्क्सवादी आलोचक हैं, परन्तु इस निबंध में वे तुलसी की प्रगतिशीलता को तटस्थ रूप से विश्लेषित कर सके हैं।

(2) विचारधारा को आक्षेप से ऊपर उठकर शर्मा जी ने जोरदार ढंग से मध्यकालीन परिस्थितियों को उकेरा है।

(3) भाषा तद्भव एवं तत्सम का मिश्रण है तथा प्रभावपूर्ण है।

(4) प्रासंगिकता :-
शर्मा जी की यह संवेदनशीलता आधुनिककाल के दलित धारा के लेखकों की संवेदना की पृष्ठभूमि के रूप में देखी जा सकती है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्यांश भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध निबन्धकार बाल कृष्ण भट्ट द्वारा रचित भारतीय संस्कृत जनसमूह के हृदय का विकास निबंध से लिया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक द्वारा हिन्दू जाति के विखण्डन की परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या :-

लेखक भारतीय संस्कृति की व्याख्या के क्रम में हिन्दू जाति के विखण्डन के कारणों पर भी प्रकाश डालता है।

लेखक का मानना है कि हिन्दू जाति में नये-नये मत मतान्तरों का उदय होने से इसकी एकता खण्डित हो गयी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यह एक वैदिक सम्प्रदाय की भाँति नहीं रह सकी है।

विशेषताएं:

1) लेखक के भारतीय संस्कृति पर "हिन्दू संस्कृति" का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

2) हिन्दू जाति के विखण्डन को विभिन्न मतों के उदय के परिणाम के रूप में दर्शाया गया है।

3) भाषा तत्समयुक्त, किन्तु प्रवाहपूर्ण है।

4) मुहावरों का कुशल प्रयोग दृष्टव्य है।

5) भारतेन्दुयुगीन निबन्ध कला एवं भाषागत वैशिष्ट्य में इस निबंध का प्रमुख स्थान है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

'गोदान' मुंशी प्रेमचन्द का महाकाव्यात्मक उपन्यास है। यह उपन्यास यथार्थवाद की स्वाभाविक प्रस्तुति के साथ-साथ प्रेमचन्द की सर्जनात्मक दृष्टि का आस्वादन उपलब्ध कराता है।

किसी भी उपन्यास के नामकरण के सम्बन्ध में कुछ स्वाभाविक प्रश्न उठते हैं। पहला प्रश्न तो यह कि नामकरण किस प्रकार से सम्पूर्ण रचना को व्यक्त करता है? दूसरा प्रश्न यह कि क्या इस रचना का कोई और नाम हो सकता है? तीसरा यह कि क्या कोई अन्य नाम वास्तविक नाम से बेहतर हो सकता है?

इन प्रश्नों पर गौर करें तो हम पाते हैं कि गोदान एक प्रतीक है जो भारतीय परम्परा में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किसी व्यक्ति के मृत्यु से पूर्व की अवस्था में सम्पन्न कराया जाता है।

इस दृष्टि से देखें, तो गोदान का होरी अपने सम्पूर्ण जीवन में एक गाय का सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। वह किसी भी प्रकार से अपने घर में एक गाय पालना चाहता है।

गाय आती भी है, परन्तु होरी बहुत दिनों तक उसका सुख प्राप्त नहीं कर पाता है। वस्तुतः गोदान एक भारतीय किसान के सम्पूर्ण पारिवारिक जीवन एवं उसकी विपत्तियों एवं जीवन संघर्ष से लड़ते हुए तिल-तिल कर मरने की औपन्यासिक प्रस्तुति है।

यदि उपन्यास के अन्य पात्रों पर दृष्टि डालें, तो भी कहानी होरी और उसके संघर्षों के इर्द-गिर्द ही घूमती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उपन्यास के किसी अन्य नाम की स्थिति में यथा होरी का संघर्ष वह प्रभावपूर्ण प्रस्तुति संभव न हो पाती जो गोदान में है।

पुनः यह नाम गोदान के महाकाव्यात्मक औदात्त को सीमित कर उसे कालनिरपेक्षी बनाने की महत्ता से वंचित कर देता।

अतः अपने सम्पूर्ण पात्रों एवं घटनाओं के मध्य गोदान वह डोरी है जो प्रारम्भ से अन्त तक होरी एवं उसके माध्यम से अन्य पात्रों को आपस में संजोए रखती है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द ने एक सफल एवं सार्थक नामकरण किया है।

अच्छा प्रयास और गहराई तक मॉडल उत्तर देखें

10½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की श्रेष्ठता के कारणों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'ईदगाह' अपने सुंदर बालमनोविज्ञान के चित्रण के कारण प्रसिद्ध रही है। ईदगाह की श्रेष्ठता के कारणों की विवेचना निम्नलिखित है।

→ बाल मनोविज्ञान - प्रेमचन्द ने हामिद के माध्यम से पूरी कहानी की संवेदना का प्रभावी प्रस्तुतिकरण किया है। बच्चा हामिद अपनी संवेदना से बूढ़े हामिद का पार्ट भी अदा करता है।

प्रस्तुतिकरण

→ तत्कालीन व्यवस्था का विवरण :

बच्चों के वार्तालाप से भ्रष्टाचार, प्रशासन की ढिलाढवाली, उच्च शिक्षितों का निम्न वर्ग के प्रति उपेक्षा भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ वृद्धों की समस्याओं का अंकन :

हामिद की बूढ़ी दादी की दयनीय आर्थिक स्थिति एवं हामिद के ऊपर इसके प्रभाव का मार्मिक वर्णन किया गया है।

→ शहरों एवं गाँवों में सुविधाओं की भिन्नता का वर्णन —

शहरों में सुविधाओं की भरमार एवं गाँवों के जीवन में व्याप्त अभावों का कौतुहलपूर्ण दृश्यावलोकन बच्चों के वार्तालाप के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

→ सहज भाषा एवं संवादात्मक शैली —

प्रेमचन्द ने हिन्दुस्तानी भाषा का सहज, किन्तु प्रभावपूर्ण प्रयोग किया है। इससे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बच्चों के संवाद के साथ ही प्रेमचन्द अपनी बात दूसरी प्रभाविता के साथ कहने में सफल रहे हैं।

अपनी उपरोक्त विशेषताओं के कारण ही 'ईदगाह' प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानियों में शुमार होती है।

8½
15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'यही सच है' कहानी अपनी संवेदना के साथ-साथ शिल्प योजना की दृष्टि से भी अपने रचनाकाल युगीन साहित्यिक प्रवृत्तियों को प्रभावी रूप से व्यक्त करता है।

इस कहानी की भाषा प्रायः तदभवयुक्त है। संवाद छोटे एवं चुस्त है। भावों का प्रयोग परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव को प्रभावी रूप से व्यक्त करते हुए नाटकीय भाव को भी व्यक्त करता है। एक उदाहरण -

"तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, वह स्पर्श, वह सुख, वह क्षण ही सत्य है, वह सब सच था, जिया था, भोगा।"

भण्डारी जी द्वारा कथ्य के अनुरूप भाषा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~भाषा~~ का चुनाव किया गया है। अपनी साफगोई, बेबाक अंदाज एवं स्पष्ट बयानी के लिए प्रसिद्ध भण्डारी जी की भाषा एवं शैली का यह रूप यहाँ भी प्रदर्शित हुआ है।

इस कहानी के शिल्प की एक अन्य विशेषता इसके कथानक का आदि, मध्य अन्त के स्थान पर चरित्र विशेष के अन्तर्मन का गंभीर एवं सूक्ष्म चित्रण रहा है।

दीपा के प्रेम जीवन के उतार-चढ़ाव उसके विभिन्न प्रेमियों का प्रभावी चित्रण भण्डारी जी ने कुशल चितेरा की भाँति किया है। चूंकि वे स्वयं फिल्मों की पटकथा लेखन से जुड़ी रही हैं, इसलिए इस कहानी की घटनाएँ पाठक के सामने चलचित्र चलने के समान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभाव उत्पन्न करता है।

संक्षेपतः इस कहानी में भाषा, शैली, चरित्र योजना, संवाद योजना एवं कथानक के आधार पर लेखिका अपने रचना के उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रही है।

अच्छी शैली

प्रयास अच्छा है
और बेहतर बनाएँ
कोशिश जारी रखें

7½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'गोदान पर छायावादयुगीन नारीत्व परिकल्पना, प्रेमदर्शन एवं रोमांटिक दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रभाव है।' इस कथन की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान पर छायावादी नारी की आदर्श कल्पना स्पष्ट है।

=> मालती का प्रेम के प्रति स्वस्थ दैहिक नहीं आत्मिक है।

=> मि. खन्ना की पत्नी, अनेक विपत्तियों के बाद भी मि. खन्ना के साथ ही रहती है।

=> प्रेम को अत्यन्त पवित्र वस्तु के रूप में दर्शाया गया है।

यद्यपि

=> संयोग के माध्यम से नारी के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बदलते रूप को भी दिखाया गया है।

=) सिलिया जैसे चरित्र भी नारीवादी रोमांटिक दृष्टि को व्यक्त नहीं करते है।

अतः प्रेमचन्द ने छायावादी नारी कल्पना का पालन तो किया है जो कि मालती के इस कथन →

" मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की नहीं आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्म समर्पण है। "

से व्यक्त होता है।

वस्तुतः प्रेमचन्द के ऊपर छायावाद

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का युगीन प्रभाव तो रहा है। परन्तु वे एक ऐसे रचनाकार हैं जो अपने पात्रों की रचना के बाद उन्हें विकसित होने का पूर्ण अवसर प्रदान करते हैं।

इस दृष्टि से देखें तो प्रेमचन्द अपने नारी पात्रों की रचना में अपने विचारों का ~~प्रक्षेपण~~ प्रक्षेपण नहीं किया है। वस्तुतः उन्हें स्वतंत्र विकास का परिस्थितिनुसार मौका दिया है।

प्रयास ठीक है और गहराई लाएँ। मॉडल उत्तर देखें

9/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'वर्ग-मनोविज्ञान के अंकन में प्रेमचंद सिद्धहस्त है।' प्रेमचंद की कहानियों के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्ग-मनोविज्ञान में प्रेमचन्द सिद्धहस्त है उनकी कहानियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

=) वृद्ध मनोविज्ञान =)

बूढ़ी काकी इसी माध्यम से प्रेमचन्द ने सशक्त प्रस्तुति की है।

=) बाल मनोविज्ञान =)

ईदगाह के माध्यम से इसे प्रभावी रूप से दर्शाया गया है।

=) निम्न जातियों की स्थिति

सद्गति, कफन, के माध्यम से इसे दर्शाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किसानों की समस्याएँ =>

पूस की रात, जैसी कहानियों से स्पष्ट व्यक्त किया गया है।

परिवार में महिलाओं के संबंध –

अलगोझया जैसी कहानियों में दर्शाया गया है।

वस्तुतः मनोविज्ञान में प्रेमचंद ने (वर्गीय) अपने पात्रों के माध्यम से प्रभावपूर्ण प्रस्तुति की है। यह उनके उपन्यासों यथा गोदान के होरी एवं रंगभूमि के सूरदास में परिलक्षित होता है।

प्रयास ठीक है और उदाहरण और ज्यादा देते

7/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

न में
write
is space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेन्द्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजेन्द्र यादव की कहानी टूटना नई कहानी की विभिन्न विशेषताओं को स्वयं में समाहित करती है।

नई कहानी की प्रमुख विशेषताएं

-> व्यक्तित्व का विखण्डन एवं अजनबीपन
-> पात्रों के अन्तर्मन का सूक्ष्म विश्लेषण
-> कथानक का टूटना
-> कथानक में आदि, मध्य, अन्त का प्रवाह न होना
-> मुख्यत: शहरी मध्यमवर्ग की समस्याओं का चित्रण इत्यादि प्रमुख है।

टूटना में लीना एवं किशोर के प्रेम, विवाह एवं अलग होने के संदर्भ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मे उपरोक्त परिस्थितियों का समावेश किया गया है।

→ इसमें कथानक टूट गया है
→ लीना एवं किशोर के मध्य सम्बन्धों का टकराव आया है।
→ किशोर आत्मविश्वास से ग्रसित है।
→ पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है।

इस दृष्टि से 'दूसरा कहानी' नई कहानी के दौर की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है।

औसत प्रयास

7½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

इस भाग के योग्य उत्तर

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (क) क्या आप इस मत से सहमत हैं कि गोदान महाकाव्यात्मक उपन्यास है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 20

'गोदान' मुंशी प्रेमचन्द का चर्चित उपन्यास है जहाँ उन्होंने यथार्थवाद का स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया है।

किसी भी उपन्यास के महाकाव्यात्मक उपन्यास होने के लिए आवश्यक है कि इसमें तत्कालीन, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों का विशद वर्णन किया जाये।

गोदान में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का विशद वर्णन किया गया है। गाँव-शहर विभेद का वर्णन, गाँवों में व्याप्त ऊँच-नीच, सूदखोरी, कृषकों की समस्याएँ, जमींदारों की लूट का व्यापक वर्णन मिलता है।

तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था का भी स्पष्ट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वर्णन देखने को मिलता है। किसानों की गरणग्रस्तता, महाजनों की सूदखोरी, शहरों में भी प्रसार होते बैंकिंग इत्यादि का सफल चित्रण किया गया है।

सांस्कृतिक आयामों का भी भरपूर चित्रण किया गया है। होरी का मर्यादा में विश्वास, धर्मभीरु होना प्रदर्शित है।

बदलते सांस्कृतिक आयामों में गोबर को विरोधी चरित्र, खेती एवं मजदूरी का विभेद एवं धन की बढ़ती महत्ता को प्रदर्शित किया गया है।

उभरते पूंजीवाद, बदलते सामंतवाद जैसे युगीन परिस्थितियों का चित्रण, तो वहीं पत्रकारिता एवं प्रेस की भूमिका पर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

चौथा उत्तर ... अंक नहीं जुड़ेंगे

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भी प्रकाश डाला गया है।

यद्यपि इन समस्त विवरणों में भौगोलिक विवरण कुछ कम है। यद्यपि अत्यधिक भौगोलिक विवरण इस उपन्यास की काल निरपेक्षता को भी बाधित करते

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि मुंशीजी ने गोदान के माध्यम से एक सफल एवं सार्थक महाकाव्यात्मक उपन्यास की रचना की है।

10

अच्छा प्रयास और गहराई लाएँ मॉडल उत्तर पढ़ें

20

(अंक जोड़ा नहीं जाएगा)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के लिए उपलब्ध मोटनाकेथा-गिलाफों की उपस्थिति दर्शायी गयी है। सामाजिक एवं आर्थिक विभेद उभारा गया है।

=) सटीक संवाद एवं चरित्रयोजना :-

हल्कू, मुन्नी एवं झबरा जैसे चरित्रों तथा कुशल संवाद योजना से कहानी की संवेदना को बल मिला है।

इस प्रकार प्रेमचंद ने अपने कलम को किसानों एवं निम्न वर्गों की समस्याओं को प्रभावी रूप से उभारने में प्रयोग किया है। संवेदनात्मक रूप से यह एक सफल कहानी है।

पौ का 3 न (
अंक बांटा नहीं जाएगा
गहराई लाएं बढ़त उत्तर देने
6
15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'पूस की रात' कहानी की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर प्रगमन उनकी कहानियाँ पूस की रात एवं कफन इत्यादि में दिखाई देता है।

संवेदना के मुख्य तत्व

→ आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर –

यहाँ यथार्थ का स्वाभाविक वर्णन किया गया है। हल्कू के माध्यम से किसानों की दुर्दशा का वर्णन किया गया है।

→ किसान एवं उच्च वर्ग विभेद

हल्कू को भयंकर जाड़ों में ठण्ड से ठिठुरना पड़ता है, तो वहीं वह अमीरों के

(कृपया पृष्ठ पीछे पलटें - क्यों कि प्रश्नों के लिए स्पेस नहीं है)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गोदान के 'गोबर' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गोदान का गोबर अपनी मूल प्रकृति में एक विद्रोही चरित्र है। प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है।

=) धर्मभीरु नहीं बल्कि साहसी →

गोबर धर्मभीरु नहीं है। वह झुनिया से विवाह करके साबित कर देता है कि उसके लिए जात-पात बहुत अधिक मायने नहीं रखता है।

=) बंधनों को तोड़ने वाला -

वह मानता है कि यदि रुपये पास में है तो न जात का काम है न बिरादरी का। वह किसानी को भी मर्यादा का विषय

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं मानता है और शहर मे मजदूरी करता है

प्रगतिशील =)

गोबर अपने पिता के विपरीत सामंतवादी प्रवृत्तियों का प्रतिकार करता है। वह राय साहब की स्वामिभक्ति को दासता मानता है। वह धर्म की अंधी बेड़ियों से जकड़ने का विरोध भी करता है।

संक्षेपत: गोबर अपनी प्रवृत्ति मे प्रगतिशील, साहसी, सामंतवादी बंधनों को तोड़ने वाला प्रभावी चरित्र है।

अच्छा प्रयास 7 1/2 / 15

चौथा उत्तर अंक नहीं जोड़ा जाएगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation